फरीदाबाद

मजदूर समाचार

जीवन की लौ को सृजनात्मक तौर पर प्रचुर करने का एक माध्यम

'मजदूर समाचार' की कुछ सामग्री अंग्रेजी में इन्टरनेट पर है। देखें–
< http://faridabad majdoorsamachar.blogspot.com

डाक पता : मजदूर लाईब्रेरी, आटोपिन झुग्गी, एन.आई.टी. फरीदाबाद – 121001

नई सीरीज नम्बर 282 1/- दिसम्बर 2011

क्रियाशील है जीवन शक्ति

"7 से 14 अक्टूबर के दौरान मारुति सुजुकी फैक्ट्री के अन्दर बहुत-ही बढ़िया समय रहा। न काम की टेन्शन। न आने-जाने का तनाव। न बस पकड़ने की चिन्ता। न खाना बनाने की टेन्शन। न खाना खाने की चिन्ता कि 7 बजे ही खाना है या 9 बजे ही खाना है। न इस बात की टेन्शन कि आज कौन-सा दिन है और कौन-सी तारीख चल रही है। निजी बातें बहुत होती थी। एक-दूसरे के इतने करीब कभी नहीं आये जितने इन 7 दिनों में आये।"

"पहले हम प्रधान, महासचिव, विभाग संयोजक पर डाल देते थे–वे बतायेंगे। लेकिन, अब हर मजदूर स्वयं उत्तर देता है। हर बात पर हर कोई अपनी राय देता है। माहौल बदल गया है। मारुति सुजुकी मानेसर मजदूर आपस में हँसी-मजाक करते हैं और मस्ती में लाइन पर भी 'इन्कलाब जिन्दाबाद !' बोल देते हैं।"

"विश्व-व्यापी जीवन की इस अँगड़ाई में मानेसर का नाद, उत्पादित नया समय और रचित नये जोड़ नई ऊर्जा प्रदान कर रहे हैं।" 'मजदूर समाचार' के पिछले अंक में इन बातों पर विचार करते हुये एक साथी ने अभिभूत हो कर अपने तीस वर्ष की रचनात्मक क्रियाओं के अनुभवों को नई ऊर्जा के साथ व्यक्त किया। इन तीस वर्षों में उन्होंने जिन अनेक जोड़ों की रचना-निर्माण-विस्तार किया उनकी चर्चा में लीन हो गये। हजारों सहकर्मियों के संग दीर्घकालीन और गहरे जोड़ तो बनाये ही, कई स्थानों पर हजारों अनजान लोगों के साथ भी सजीव जोड़ बनाये। और, यह सिलसिला नये स्तरों पर गतिमान है जिनमें एक स्तर पर वह साथी हर रोज तीन घण्टे जाने-अनजाने बच्चों, वृद्धों, महिलाओं, पुरुषों का निशुल्क रिफ्लैक्सोलॉजी उपचार करते हैं।

यह हम सब की वास्तविकता है। हम हर समय किसी-न-किसी रूप में दुनिया के सम्मुख रचनाकार के रूप में, जीवनदायिनी शक्ति के तौर पर खड़े होते हैं। लेकिन, हम सब की इस क्रियाशील जीवन शक्ति को प्रतिक्रिया वाली शक्तियाँ घाव, पीड़ा, पराजय के शब्द-आडम्बर में लपेट कर मूक बनाने में लगी रहती हैं, चुप्पी में धकेलने में लगी रहती हैं।

समय है रचना का
सृजना के नृत्य का

" पूरी दुनिया देख रही है पूरी दुनिया को बदलते हुये" का उल्लास व्यक्त हुआ था मानेसर के एक युवा साथी के शब्दों में। क्या देख रहे हैं ? क्या बदल रहा है ?

बिलकुल स्पष्ट है विश्व के हर क्षेत्र में सरकारें लड़खड़ा रही हैं अधिकाधिक डगमग हैं, कोई भी संस्था किसी भी संस्था पर विश्वास नहीं कर रही, कोई भी प्रतिनिधि किसी भी प्रतिनिधि पर भरोसा नहीं कर रही-रहा। विश्व के प्रमुख आर्थिक समाचार पत्रों में धुँआधार बहस चल रही है कि कब क्या हो जाये पता नहीं। एक सरकार दूसरी सरकार पर आरोप लगा रही है, एक बैंक दूसरे बैंक पर आरोप लगा रहा है, सरकारें बैंकों पर और वित्त संस्थायें सरकारों पर आरोप लगा रही हैं, कम्पनियाँ सरकारों पर और सरकारें कम्पनियों पर आरोप लगा रही हैं। फाइनैन्शियल टाइम्स के यूरोप संस्करण के 7 नवम्बर अंक में एक स्थापित ज्ञानी के लेख में वाशिंगटन में साहबों के बीच का एक चुटकुला देखें: "एक ड्राइवर वाशिंगटन में जाम में फँसा था। एक व्यक्ति ने खिड़की खटखटाई और बोला, 'आतंकवादियों ने संसद का अपहरण कर लिया है और वे 500 करोड़ रुपये माँग रहे हैं अन्यथा वे सांसदों पर पैट्रोल छिड़क कर जला डालेंगे। हम एक से दूसरी कार जा कर दान एकत्र कर रहे हैं।' ड्राइवर ने पूछा, 'लोग कितना दे रहे हैं?' झट से वह व्यक्ति बोला, 'चार लीटर पैट्रोल।'" लेखक के अनुसार संसद की ऐसी अवमानना देखी-सुनी नहीं पर जायज लगती है।

जिनकी स्थिति ऊपर बयान की गई है वे इन एक सौ वर्षों के दौरान स्वयं को क्रिया के वाहक के तौर पर प्रस्तुत करते रहे हैं और व्यापक स्तर पर उन्हें ऐसा देखा भी गया। सरकारों, कम्पनियों, साहबों, प्रतिनिधियों को क्रिया के वाहक पेश किया गया और देखा गया। इनका दिवालियापन अब शंका से परे है। आज तो और भी साफ-साफ दीखने लगा है कि यह सब जीवन के उल्लास, बेरोक अभिव्यक्तियों, और पृथ्वी पर स्वयं जीवन के भविष्य के विरुद्ध खड़े हैं। इन से कोई क्या डिमाण्ड करेगी-केरगा?!

यह जो माँग-विहीन स्थिति उत्पन्न हुई है यह अपने आप पैदा नहीं हुई है। कोई डिमाण्ड ही नहीं की हालात उपज है करोड़ों लोगों के अरबों प्रयासों की। जीवन के आनन्द को अभिव्यक्त करने तथा व्यापक बनाने पर आधारित हैं यह कोशिशें। प्रतिक्रिया वाली शक्तियों की लाखों बाधाओं और हमलों से टकराते हुये, उनकी सीमाओं को लाँघते हुये जीवन के आनन्द की अभिव्यक्तियाँ निरन्तर जारी हैं। जीवन आनन्द है, जीवन के अनेकानेक रसों को आत्मसात करने का समय है यह। जीवन का उन्माद, जीवन का बावलापन..... इन को घना और तीव्र करने का समय है यह।

इसलिये हम स्वयं से कह रहे हैं, मित्रों से कह रहे हैं, तथाकथित शत्रुओं से हँस कर कहते हैं कि स्यापा छोड़ो, विलाप को त्याग दो, छाती पीटना बन्द करो और उल्लासपूर्ण जीवन के लिये बेधड़क हो कर रचना-सृजना-कल्पना में जुट जाओ।■

महीने में एक बार छापते हैं, 10,000 प्रतियाँ निशुल्क बाँटने का प्रयास करते हैं। मजदूर समाचार में आपको कोई बात गलत लगे तो हमें अवश्य बतायें। अन्यथा भी, चर्चाओं के लिए समय निकालें।

दिल्ली-गुड़गाँव-फरीदाबाद में मजदूर

●***दिल्ली सरकार** द्वारा निर्धारित न्यूनतम वेतन : अकुशल श्रमिक 6422 रुपये (8 घण्टे के 247 रुपये); अर्ध-कुशल श्रमिक 7098 रुपये (8 घण्टे के 273 रुपये); कुशल श्रमिक 7826 रुपये (8 घण्टे के 301 रुपये)* / पच्चीस-पचास पैसे का पोस्ट कार्ड डालने के लिये एक पता : श्रम आयुक्त दिल्ली सरकार, 5 शामनाथ मार्ग, दिल्ली—110054 ●**हरियाणा सरकार** द्वारा निर्धारित न्यूनतम वेतन : *अकुशल मजदूर (हैल्पर) 4644 रुपये (8 घण्टे के 179 रुपये); अर्ध-कुशल ब 4904 रुपये (8 घण्टे के 189 रुपये); उच्च कुशल मजदूर 5294 रुपये (8 घण्टे के 204 रुपये)* / इस सन्दर्भ में 25-50 पैसे के पोस्ट कार्ड डालने के लिये एक पता : श्रम आयुक्त, हरियाणा सरकार, 30 बेज बिल्डिंग, सैक्टर-17, चण्डीगढ ।

इम्पीरियल ऑटो इन्डस्ट्रीज, प्लॉट 94 सैक्टर-25, फरीदाबाद स्थित फैक्ट्री में 30 नवम्बर को आग लगी। आठ मजदूरों की जलने से मृत्यु हो गई है। इम्पीरियल ऑटो कम्पनी की इस फैक्ट्री में महिन्द्रा, टोयोटा, मारुति सुजुकि, जे सी बी आदि के हॉज पाइप बनते हैं। दिल्ली और आस-पास के क्षेत्र की फैक्ट्रियों में काम करते 75 प्रतिशत मजदूरों की ई.एस.आई. नहीं है। इम्पीरियल ऑटो में जले-मरे मजदूर क्या इस श्रेणी में हैं ?

बोनी पोलीमर्स मजदूर : "प्लॉट 34 सैक्टर-3 आई.एम.टी. मानेसर स्थित फैक्ट्री में **दिन की** 12½ और रात 12 घण्टे की शिफ्ट हैं — **रविवार को** शिफ्ट बदलती हैं तब दिन वालों को **24 घण्टे रोकते हैं**। महिला मजदूरों की दिन में 12 **घण्टे की** शिफ्ट। ओवर टाइम का भुगतान मात्र **15 रुपये** 90 पैसे प्रतिघण्टा। स्टाफ के 5 लोग ही **स्थाई हैं**, 300 मजदूरों को ठेकेदारों के जरिये रखा है। आठ-दस में से एक-न-एक ठेकेदार भाग जाता है और मजदूरों के किये काम के पैसे तथा पी.एफ. राशि मारे जाते हैं — कम्पनी नहीं देती। साहब बहुत गाली देते हैं। ई.एस.आई. व पी.एफ. काट कर हैल्पर की तनखा 3600 रुपये। ई.एस.आई. के टेम्परेरी कार्ड पर न मोहर होती और न पता — ई.एस.आई. वाले दवा नहीं देते और कम्पनी वाले साथ जाने को तैयार नहीं होते। पीने का पानी ठीक नहीं। शौचालय गन्दे। हाथ धोने का साबुन भी नहीं देते। कैन्टीन नहीं है और जब 24 घण्टे रोकते हैं तब रोटी नहीं देते, एक घण्टे में कमरे से खा कर आओ। मोल्डिंग विभाग में हर समय पसीने से भीगे रहते हैं — पँखे भी नहीं हैं। यहाँ **अनु ऑटो, क्यू एच टालब्रोस, सनबीम, डेल्फी, रीको, होण्डा, सुजुकी, मारुति सुजुकी, ए जी इन्डस्ट्रीज** के हिस्से-पुर्जे बनते हैं।"

पेनेक्स ओवरसीज श्रमिक : "प्लॉट 42 सैक्टर-4 आई.एम.टी. मानेसर स्थित फैक्ट्री में सुबह 9 से रात 8 तक रोज काम और महीने में 15-16 रोज रात 1 बजे तक रोकते हैं। ओवर टाइम का भुगतान सिंगल रेट से। दस मिनट देरी पर 1 घण्टा काट लेते हैं, गड़बड़ी कर महीने में 500-1000 रुपये खा जाते हैं। प्रोडक्शन मैनेजर बहुत गाली देता है और एच आर साहब काटने में लगा रहता है। ठेकेदार के जरिये रखी 25 महिला मजदूरों की तनखा 4000 रुपये।"

बैक्सटर कामगार : "प्लॉट 5 सैक्टर-5 आई.एम.टी. मानेसर स्थित फैक्ट्री में दवा के बैग बनाते और गुर्दे की दवा पैक करते 500 मजदूरों में से 150 को ठेकेदारों के जरिये रखा है। भर्ती के समय तनखा (8 घण्टे ड्युटी, साप्ताहिक अवकाश) 5400 रुपये बताते हैं पर महीने के तीसों दिन ड्युटी पर देते 5200 हैं। तीन शिफ्ट 8-8 घण्टे की हैं और कहते हैं कि ओवर टाइम नहीं है लेकिन.. ... लेकिन महीने में 10 दिन 16 घण्टे काम करवाते हैं और इन 80 घण्टे कार्य के कोई पैसे नहीं देते। जब 16 घण्टे रोकते हैं तब कहते हैं कि रोटी लायेंगे, पर लाते नहीं। दो अक्टूबर को काम करवाया, दिवाली पर तीन छुट्टी में दो छुट्टी को काम करवाया..... इस काम के पैसे नहीं दिये। महीने में मजदूरों के इस प्रकार 1700 रुपये ठेकेदार खा जाते हैं। नये परसनल मैनेजर को यह बताया — कोई असर नहीं।"

मॉडर्न प्रीफैब सिस्टम वरकर : "प्लॉट 273-74 सैक्टर-7 आई.एम.टी. मानेसर स्थित फैक्ट्री में 7 स्थाई मजदूरों और तीन ठेकेदारों के जरिये रखे 250 मजदूरों की सुबह 8½ से रात 8½ की शिफ्ट है तथा फिर रात 1 बजे तक रोक लेते हैं। महीने में 15-20 रोज जबरन रात 1 बजे तक रोकते हैं। महीने में 180-190 घण्टे ओवर टाइम के होते हैं पर स्लिप में 40-42 घण्टे ही दिखाते हैं।"

बजाज मोटर मजदूर : "प्लॉट 621 सैक्टर-8 आई.एम.टी. मानेसर स्थित फैक्ट्री में महीने में 50-100 घण्टे ओवर टाइम, भुगतान सिंगल रेट से। नई फैक्ट्री है, भोजन की दिक्कत के कारण मजदूर छोड़ जाते हैं।"

ईस्टर्न मेडिकिट श्रमिक : "उद्योग विहार, गुड़गाँव स्थित कम्पनी की फैक्ट्रियों में कैजुअल वरकरों को अक्टूबर की तनखा 22 नवम्बर को दी। कैजुअलों की 12-12 घण्टे की दो शिफ्ट हैं, ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से भी कम, और सितम्बर में करवाये ओवर टाइम के पैसे 10 नवम्बर को जा कर दिये। ई.एस.आई. कार्ड नहीं देते और नौकरी छोड़ने के बाद फण्ड के पैसों के लिये फार्म पर हस्ताक्षर के लिये मजदूर को दो महीने चक्कर कटवाते हैं।"

टालब्रोस कामगार : "प्लॉट 75 सैक्टर-6, फरीदाबाद स्थित फैक्ट्री में 12-12 घण्टे की दो शिफ्ट हैं। रविवार को 12 से 20 घण्टे की एक ही शिफ्ट जिसे ओवर टाइम कहते हैं। हैल्परों को 12 घण्टे पर 26 दिन के 4800 और सी एन सी ऑपरेटरों को 5000 रुपये। जिसे ओवर टाइम कहते हैं उसके पैसे भी सिंगल रेट से। दो सौ से ज्यादा मजदूर **महिन्द्रा, टाटा, मारुति सुजुकी** के एक्सल बनाते हैं। ई.एस.आई. व पी.एफ. एक भी मजदूर की नहीं हैं, उन दस-बारह की भी नहीं जिनकी तनखा 5600-6500 रुपये है। पीने का पानी खारा। शौचालय बहुत गन्दे। टालब्रोस की प्लॉट, 74 वाली फैक्ट्री में 60 स्थाई मजदूर भी हैं — वहाँ पानी ठीक, शौचालय साफ !"

लखानी वरदान ग्रुप वरकर : "प्लॉट 265 सैक्टर-24, फरीदाबाद स्थित फैक्ट्री में पानी पीने की जगह इतनी गन्दी रहती है कि पानी पीने को मन नहीं करता। कैन्टीन में भोजन ठीक नहीं है, पेट नहीं भरता, और इधर ब्रेड पकोड़े को भी छोटा कर दिया है। तनखा हर महीने देरी से, अक्टूबर की 21 नवम्बर तक दी।"

सीजन एग्जिम मजदूर : "ए-278 ओखला फेज-1, दिल्ली स्थित फैक्ट्री में फिनिशिंग विभाग में सुबह 10 से साँय $7\frac{1}{4}$ की ड्युटी है। रोज $9\frac{1}{4}$ घण्टे काम पर 26 दिन के मजदूरों को 5000-5500 रुपये देते हैं। सिलाई विभाग में सुबह 9 से रात 9 की शिफ्ट है। सिलाई कारीगर पीस रेट पर हैं और हैल्परों को 12 घण्टे रोज पर 26 दिन के 6000 रुपये देते हैं। फैक्ट्री में 80 मजदूर हैं जिनमें 10 की पी.एफ. है और 30 की ई.एस.आई. है। फैक्ट्री पहले ओखला फेज-2 में थी और उत्पादन तथा फिनिशिंग का अधिकतर काम फैक्ट्री के बाहर ठेकेदारों के जरिये करवाया जाता है। इधर पीस रेट बढवाने के लिये 24 नवम्बर को सिलाई कारीगरों ने काम बन्द किया तो मैनेजर ने 5 से 10 रुपये बढा दिये पर .... पर 30 नवम्बर को पैसे पुराने रेट पर ही दिये। मैनेजर के मुकरने से रोज फैक्ट्री में हो-हल्ला हो रहा है। सुबह 9 से रात 9 तक कभी कोई तो कभी कोई मजदूर चिल्लाता है, खूब मजा आ रहा है। मैनेजमेन्ट कह रही है कि पुराने रेट को भी घटायेंगे। दिवाली पर मैनेजमेन्ट ने बोनस देने से इनकार किया था। दिवाली के दिन, 26 अक्टूबर को भी फैक्ट्री में काम चल रहा था। बोनस के लिये 11 बजे डायरेक्टर से धक्का-मुक्की हुई। मैनेजमेन्ट ने फैक्ट्री में पुलिस बुला ली थी। और, 1 बजे से बोनस में एक महीने की तनखा देनी शुरू की। सिलाई कारीगरों ने शोर-शराबा किया तब पीस रेट वालों को 500-500 रुपये दिये थे।"

थीम एक्सपोर्ट श्रमिक : "एफ-25/1 ओखला फेज-2, दिल्ली स्थित फैक्ट्री में जाँच के लिये जिस दिन श्रम अधिकारी आते हैं उस रोज मैनेजमेन्ट अस्थाई सिलाई कारीगरों की छुट्टी कर देती है।"

रूप पोलीमर्स कामगार : "प्लॉट 23 सैक्टर-3 आई.एम.टी. मानेसर स्थित फैक्ट्री में 600 मजदूर 12-12 घण्टे की दो शिफ्टों में **होण्डा, मारुति सुजुकी, रेलवे, वायुयानों** के रबड़ के हिस्से-पुर्जे बनाते हैं। शिफ्ट बदलती है तब 18-18 घण्टे की ड्युटी : शनिवार को रात 8 बजे काम आरम्भ करने वालों को रविवार को दोपहर बाद 2 बजे छोड़ते हैं और **(बाकी पेज तीन पर)**

गुजरात में

दस वर्ष से सूरत में कपड़ों की रंगाई व छपाई फैक्ट्रियों में काम करता मजदूर : सूरत शहर और गुजरात इन्डस्ट्रीयल डेवलेपमेन्ट कॉरपोरेशन के पण्डेसरा औद्योगिक क्षेत्र में बिलटैक्स, महेश डाइंग एण्ड प्रिन्टिंग, बालकृष्णा डाइंग एण्ड प्रिंटिंग, पंछी डाइंग, ओरियन्टल डाइंग एण्ड प्रिन्टिंग, मनहर डाइंग एण्ड प्रिन्टिंग फैक्ट्रियों में काम कर चुका हूँ। आरम्भ में हैल्पर (बेगारी) लगा तब 12 घण्टे के 65 रुपये देते थे। अब डाइंग में हैल्पर को 12 घण्टे के 165-170, फ्लैटरमैन को 180-185, और ऑपरेटर को 200 रुपये देते हैं। प्रिन्टिंग में अब बेगारी को 12 घण्टे के 200, चेकरमैन को 250 और ऑपरेटर को 300-400 रुपये देते हैं। रंगाई-छपाई फैक्ट्रियों में 400 से 1200 मजदूर हैं और हर फैक्ट्री में 12-12 घण्टे की दो शिफ्ट हैं। पण्डेसरा औद्योगिक क्षेत्र की फैक्ट्रियों में ही चार लाख के करीब मजदूर हैं पर ई.एस.आई. व पी.एफ. किसी मजदूर की नहीं हैं। बॉम्बे डाइंग में 8 घण्टे की ड्युटी और ई.एस.आई. व पी.एफ. थी, वह 6-7 वर्ष पहले बन्द हो गई। अब पण्डेसरा औद्योगिक क्षेत्र में किसी भी फैक्ट्री में 8 घण्टे ड्युटी और ई.एस.आई. व पी.एफ. नहीं हैं। कपड़ा बुनने वाले मजदूरों को मीटर के हिसाब से पैसे मिलते हैं और 6 मशीनें (लूम) चलाने वाले को 12 घण्टे के 250-300 रुपये पड़ते हैं। सचिन इन्डस्ट्रीयल एरिया जो कि 6-7 किलोमीटर दूर है वहाँ 10-15 रुपये अधिक मिलते हैं पर बाकी सब ऐसा ही है। महीने में दो बार, 15 दिन में भुगतान होता है। किराये के कमरे के लिये 2 से 5 हजार रुपये पहले जमा करने पड़ते हैं। गैस के भाव बढाने के खिलाफ रंगाई व छपाई फैक्ट्रियों ने तालाबन्दी की। पाँच दिन बाद फैक्ट्रियाँ खोली तब 500 से ऊपर फैक्ट्रियों में काम करते 4 लाख मजदूरों ने बैठाये दिनों के पैसे माँगे। मैनेजमेन्टों की आनाकानी पर मजदूर फैक्ट्रियों के अन्दर ही नहीं गये। बैठे दिनों के पैसे दिये तब फैक्ट्रियों में काम आरम्भ हुआ। सूरत में ही कुछ हजार फैक्ट्रियों में कपड़ा बुनते दस लाख मजदूरों ने छह दिन काम बन्द रखा था। इतनी ज्यादा फैक्ट्रियों के मजदूरों के बीच तालमेलों का सिलसिला बढ रहा है। ऐसे तालमेल अनुकरणीय हैं।

दिल्ली-गुड़गाँव-फरी... (पेज दो का शेष)

रविवार 2 बजे लगा कर सोमवार को सुबह 8 बजे छोड़ते हैं। कोई छुट्टी नहीं। दिवाली की दो छुट्टी के बदले दो रविवारों के पैसे काट लिये। ओवर टाइम का भुगतान सिंगल रेट से भी कम, मात्र 19 रुपये 30 पैसे प्रतिघण्टा।"

फ्रेन्ड्स कलर इमेजेज वरकर : "प्लॉट 148 सैक्टर-4 आई.एम.टी. मानेसर स्थित फैक्ट्री में इन्डस्ट्रीयल छपाई करते 200 मजदूरों की दिन में 8 घण्टे और रात में 14 घण्टे की शिफ्ट हैं। ओवर टाइम का भुगतान मात्र, मात्र 10 रुपये प्रतिघण्टा।"

लाइफलॉंग मेडिटेक मजदूर : "प्लॉट 23 सैक्टर-5 आई.एम.टी. मानेसर स्थित फैक्ट्री में 12-12 घण्टे की दो शिफ्ट, रविवार को भी 12-12 घण्टे काम। ओवर टाइम का भुगतान मात्र 20 रुपये प्रतिघण्टा।"

ऋचा ग्लोबल श्रमिक : "232 उद्योग विहार फेज-1, गुड़गाँव स्थित फैक्ट्री में फिनिशिंग विभाग में 200 महिला मजदूरों की सुबह 8½ से रात 9 की शिफ्ट और 200 पुरुष मजदूरों की रोज नाइट लगती है। सुबह 9 से रात 1 तक के बाद अगली सुबह 5 बजे तक भी रोक लेते हैं और चार घण्टे बाद फिर काम में लगो। हर रविवार को भी फिनिशिंग में काम। महीने में 200-250 घण्टे ओवर टाइम, 50 घण्टे का भुगतान दुगुनी दर से और बाकी घण्टों का सिंगल रेट से। बीमार होने पर, महीने में दो छुट्टी करने पर निकाल देते हैं। गाली देते हैं। सिलाई विभाग में रात 9, रात 11 बजे छोड़ देते हैं और कभी-कभी नाइट, फुल नाइट लगती है। मजदूरों को मोबाइल अन्दर नहीं ले जाने देते और बहुत जरूरी होता है तब भी गेट पास नहीं देते।"

मारुति सुजुकी डायरी... (पेज चार का शेष)

★ तलाशी के लिए थानेदार के आने की सूचना। अन्दर 1600 के करीब स्थाई मजदूर, ट्रेनी और अप्रेन्टिस थे। थानेदार ने एक-एक की तलाशी ली। फिर बन्दूकधारियों से घिरा डी.सी. अचानक 20-25 अधिकारियों के संग आया। थोड़ा घूमा और फिर एक जगह खड़ा हो कर बोलने लगा — माइक नहीं था, मजदूरों ने माइक दिया। शुरू में शुद्ध नेता की तरह भाषण : अच्छे मजदूर हो, पढे-लिखे हो, 5 वर्ष से बहुत अच्छा काम कर रहे हो, इतना उत्पादन किया, इतना सरकार को टैक्स, औरों से ज्यादा तनखा है, मैनेजमेन्ट अच्छी है, कुछ लोगों के बहकावे में आ गये हो, फैक्ट्री पर अवैध कब्जा किये हो, उच्च न्यायालय के आदेश का पालन करो, फैक्ट्री खाली करने का आदेश मानना ही पड़ेगा, इसके अलावा कोई चारा नहीं है, कानून से खिलवाड़ हम नही करने देंगे, रीको ऑटो मजदूरों के भटकने से आर्डर खत्म हो गये, मारुति सुजुकी बन्द हो जायेगी तो तुम्हारी नौकरी तो जायेगी पर सरकार घाटा क्यों झेले।

★ मजदूर इस आधे घण्टे डी.सी. की बातें ध्यान से सुन रहे थे। फिर डी.सी. ने कहानी सुनानी शुरू की — कहानी जो मारुति सुजकी मैनेजमेन्ट सुनाती रहती है : कछुये और खरगोश वाली बढा कर। दूसरी बार खरगोश सोया नहीं, पहले पहुँचा। तीसरी बार कछुये ने रास्ते में पानी भी लिया, कछुआ जीता। चौथी बार समतल व ऊबड़-खाबड़ रास्ता और पानी भी, तब कभी कछुआ खरगोश की पीठ पर और कभी खरगोश कछुये की पीठ पर। टीम वर्क — मजदूर और मैनेजमेन्ट मिल कर चलें। डी.सी. के कहानी शुरू करते ही मजदूर पसर गये थे, सो गये थे, आपस में बातें करने लगे थे। अन्त में डी.सी. बोला कि अतिशीघ्र मैनेजमेन्ट से समझौता वार्तायें करवायेंगे, अभी तुम आदेश मानो। एक और अधिकारी ने फिर कानून की बात की : अवैध कब्जा किया है, फैक्ट्री खाली करनी पड़ेगी। और, डी.सी. चल पड़ा तो माइक पर एक मजदूर बोला, "हम ने आपकी सारी बातें सुनी। आप अब हमारी भी सुनो।" डी.सी. रुका और एक के बाद दूसरा सवाल पूछा जाने लगा तो डी.सी. चलने लगा। तब मजदूरों ने नारे लगाने शुरू किये और तेज आवाज, बहुत तेज आवाज हुई तब डी.सी. तथा अन्य अधिकारी लगभग भागते-से फैक्ट्री से बाहर गये।

★ फैक्ट्री मैनेजर द्वारा 22 अक्टूबर को कुछ मजदूरों से चर्चा के बाद कम्पनी के उच्च अधिकारियों, मैनेजिंग एग्जेक्युटिव अफसरों ने मानेसर फैक्ट्री में सीधा हस्तक्षेप किया। राष्ट्रीय राजमार्ग 8 पर महँगे नमकीन-मिठाई स्थल पर दो दिन 60-70 के दो बैचों की मीटिंग ली। छुट्टी लेने पर कटने वाली राशि में से कुछ को फिक्स कर देंगे और कुछ को परिवर्तनशील रखेंगे। वर्ष में 16 छुट्टी दे ही दी हैं। माता-पिता का उपचार भी होगा और इसे अधिक सरल बनायेंगे। यातायात प्रबन्ध के बारे में अच्छा ही सुनोगे। यूनियन बनाओ, कोई एतराज नहीं। कमेटी बनेगी — एतराज है — छोड़ो, मत बनाओ। तनखा में बहुत अच्छी बढोतरी करेंगे, तीन महीने इन्तजार करो — पावरट्रेन से ज्यादा तनखा तो तुम्हें देंगे ही (सुजुकी पावरट्रेन में त्रिवर्षीय दीर्घकालीन समझौते में स्थाई मजदूरों की तनखा में 11,500 रुपये की वृद्धि —6500+2500+2500)। और, और साहब खुद बोले कि काम का बोझ ज्यादा है इसलिये बी-प्लान्ट चालू होने के बाद 45 सैकेन्ड की बजाय एक मिनट में कार बनेगी।

★ डिमाण्ड कोई हैं ही नहीं इसलिये बड़े साहब सारी बातें घुमा कर पॉलिसियों के बारे में ही कर रहे थे। बोले : जून के 13 दिन के बाद तुम्हारे बन्दों के साथ जो बात हुई थी उसमें सब तय हो गया था। समझ में नहीं आया है कि फिर क्या हुआ — बहकावे में आ गये या और कोई बात हुई ? एक पार्टी में मारुति सुजुकी के इन साहबों के समकक्ष ह्युन्दई, होण्डा, फॉक्सवैगन, मर्सीडीज, फोर्ड, जनरल मोटर आदि कार कम्पनियों के शीर्ष अधिकारी थे। उन में से कई मारुति सुजुकी से ही निकल कर वहाँ गये हैं। क्या पता उन्होंने ही अपनी वर्तमान कम्पनी के फायदे के लिये यह सब करवाया हो?

★ 3 नवम्बर को ए और बी शिफ्टों में एक-एक घण्टे काम बन्द कर हर विभाग में अलग-अलग मीटिंग हुई। बड़े साहबों की बातें दोहराई गई। मैनेजमेन्ट ने नवम्बर को नोटिस लगाया कि किसी कारणवश वर्क्स कमेटी बनाने का कार्यक्रम रद्द कर दिया गया है।

★ मानेसर में ए-प्लान्ट में दो शिफ्टों में 1150 वाहन बन रहे हैं। ओवर टाइम सख्ती से मना है। मैनुअल लाइन बन्द हो है। वहाँ पर 70-80 पुलिस वाले रहते हैं। सुबह-सुबह नवम्बर-अन्त में भी तौलिये लपेटे दाँत साफ करते दिखते हैं।

मारुति सुजुकी मानेसर डायरी (4)

✶ जून से पहले हर रोज ए-शिफ्ट सुबह 7 की बजाय 6 बजे आरम्भ होती थी और बी-शिफ्ट रात 12½ की बजाय 1 बज कर 40 मिनट पर छूटती थी। प्रतिदिन के इन दो घण्टे ओवर टाइम को मारुति सुजुकी मैनेजमेन्ट दिखाती नहीं थी और भुगतान दुगुनी दर की बजाय सिंगल रेट से कम्पनी करती थी। दस लाख की क्षमता और पिछले वर्ष कम्पनी द्वारा 12 लाख 70 हजार कार बेचना। जून में मजदूरों द्वारा 13 दिन फैक्ट्री पर कब्जे के बाद से यह ओवर टाइम बन्द है।

✶ एक सुपरवाइजर बोला, "मजदूरों ने दुबारा फैक्ट्री पर कब्जा करके बसें फिर से लागू करवा दी वरना भागते-भागते धोती गीली हो जाती।"

✶ दूसरी बार वाले समझौते के बाद 3 अक्टूबर को गुड कन्डक्ट बॉंड पर हस्ताक्षर कर अन्दर गये। जितने हम डरे हुये थे उससे दुगुनें सुपरवाइजर और मैनेजर डरे हुये थे। हर विभाग में प्रमुखों द्वारा प्रवचन के बाद 9 बजे लाइनों पर पहुँचे। तीस प्रतिशत मजदूरों के कार्यस्थल बदल दिये थे। तभी ठेकेदारों के जरिये रखे मजदूरों के फोन आने लगे कि स्थाई मजदूर और ट्रेनी तो अन्दर गये पर हमें नहीं लेंगे, हिसाब लेने की कह रहे हैं। बाहर रखी गई कमेटी पर विश्वास था, उसी का आदेश मान रहे थे, समिति बोली कि ठेकेदारों के जरिये रखे मजदूरों को ड्युटी पर लेने के लिये मैनेजमेन्ट को 2-3 दिन का समय दिया है।

✶ 7 अक्टूबर को बी-शिफ्ट वाले अन्दर आ रहे थे तब "कुछ होने" की बातें। अचानक 3½ बजे एक स्थान पर एकत्र हुये। जल्दी से जल्दी विभाग खाली करने और वहाँ किसी को नहीं रहने देने का निर्णय। पुरानी लाइन के सब एक जगह एकत्र हो गये। मानेसर फैक्ट्री के 170 स्थाई मजदूर और गुड़गाँव फैक्ट्री से लाये करीब 700 तथा कानपुर, रीवा, हिमाचल, बिहार, दिल्ली की आई.टी.आईयों से लाये गये 600 से ज्यादा लड़के कम्पनी द्वारा सितम्बर-आरम्भ से फैक्ट्री के अन्दर रखे जा रहे थे। उनमें से काफी को नई लाइन पर लगा दिया था। अधिकतर ऐसे मजदूर स्वयं बाहर निकल गये। चारों तरफ मजदूरों ने चेन बना रखी थी। चेन तो हम फटाफट बना लेते हैं।

✶ पुलिस के 400 लोग पहले से ही फैक्ट्री में थे। रात 8 बजे थानेदार आया और बोला कि जिन्हें जबरन रोका है उन्हें जाने दो। मैनेजमेन्ट के लोग दूर खड़े होते थे और नाम ले-ले कर उन्हें पेश करने को कहा। कुछ ने डर से बाहर जाने से मना भी किया। अगली सुबह ठेकेदारों को साथ ले कर थानेदार ने 30-40 चक्कर लगाये।

✶ 7 अक्टूबर की रात को फैक्ट्री में सोने का कार्यक्रम बना तब गद्दे-तकिये एकत्र कर बाँटने शुरू किये। सितम्बर में 24 घण्टे अन्दर रहने वालों के लिये कम्पनी ने इनका प्रबन्ध किया था। कई पन्नों में नामों की सूची मिली – हर नाम के आगे तौलिया, बनियान, कच्छा, नहाने का साबुन, टूथ ब्रुश व पेस्ट, चप्पल, खैनी-बीड़ी-सिगरेट के कालम बने थे। चौबीस घण्टे अन्दर वालों के अलावा गुड़गाँव फैक्ट्री से बसों में बाउन्सरों के साथ मजदूर लाये जाते थे – वहाँ के ठेकेदारों के जरिये रखे मजदूरों को ट्रेनी बना दिया था। सुपरवाइजर और मैनेजर भी बाउन्सरों के साथ बसों से आते-जाते थे।

✶ सुपरवाइजरों और मैनेजरों को परेशानी ही परेशानी हुई। सुरक्षा का डर : अन्दर कूद कर बन्दे कब मार दें ? बाहर पकड़ कर कब मार दें? स्थिति सामान्य होने पर कब मार दें? काम का भारी बोझ : 12 घण्टे उत्पादन, नये-अनजान बन्दे, सुपरवाइजरों-मैनेजरों को काम में लगना पड़ता। एक स्थान पर लगा एक लाइन इन्चार्ज बोला, "यहाँ पर बन्दा इतना काम कैसे करता था ?!" चिन्ता : कम्पनी बन्द हो गई तो नौकरी जायेगी। बाहर ढूँढेंगे तब – तुम वहाँ मैनेज नहीं कर पाये, यहाँ नौकरी कैसे दे सकते हैं।

✶ फैक्ट्री पर कब्जे के दौरान भड़काने के लिये मैनेजमेन्ट बड़े-बड़े ट्रेलरों के संग 100 पुलिस वाले ले कर प्रेस शॉप से डाई उठाने पहुँची। अन्दर की बात : रोकोगे तो पीटेंगे, ऐसा करना – गाड़ी के आगे लेट जाना। पचास मजदूर ट्रेलरों के सामने लेट गये। थानेदार ने हाथ खड़े कर दिये और मैनेजमेन्ट से कहा कि तुम चाहो तो इनके ऊपर से ले जाओ। गाड़ियाँ वहीं खड़ी रह गई। ड्राइवर चले गये।

✶ फैक्ट्री में मौजूद 400 पुलिसवालों के अलावा 13 अक्टूबर को साँय 200 पुलिस वाले और आ गये। रात 10 बजे बाद मजदूरों की चेन ने कैमरामैन और हेल्मेट-वेल्मेट लगाये 30-40 पुलिस वालों के संग आये प्रशासनिक अधिकारी को रोका। हाई कोर्ट के आदेश की प्रति चिपकाने आये थे। चर्चा के बाद अन्दर की समिति ने अनुमति दी। पूरी हड़बड़ाहट में थे – कागज चिपकाये तब फोटो ली, बातचीत करते समय फोटो ली। आदेश पढने के बाद पहलेपहल थोड़ी घबराहट और फिर बाहर नहीं निकलना का निर्णय। शान्त रहने का निर्णय। पुलिस ने साँय से ही कोई सामान अन्दर नहीं आने दिया था – 13 अक्टूबर की रात भूखे रहे, बातचीत में रात कटी। बचा हुआ चना सुबह अप्रेन्टिसों में बाँटा। कम्पनी ने सुबह शौचालयों का पानी बन्द कर दिया। पीने का पानी भी छिपा कर एकत्र किया। (बाकी पेज तीन पर)

हवा में नया कुछ है

पुराना ढर्रा। पेशे से सम्बन्धित सामान्य माँगें। सरकार द्वारा आश्वासन पर आश्वासन। हरियाणा में सरकारी डॉक्टरों के संगठन के पदाधिकारियों द्वारा सरकार पर दबाव डालने के लिये 8 और 9 नवम्बर को सामुहिक आकस्मिक अवकाश लेने की घोषणा।

पदाधिकारियों की अक्षमता और ढीलेढालेपन के कारण हरियाणा में संगठन के ई.एस.आई. से जुड़े 200 सदस्यों द्वारा सामुहिक अवकाश लेने से इनकार। यूँ भी, जिलों में संगठन के प्रधान आमतौर पर जिलों के प्रशासनिक प्रमुख, सिविल सर्जन हैं।

सामुहिक अवकाश से निपटने के लिये 6 नवम्बर को फरीदाबाद में, जिला प्रशासन ने आदेश दिया कि 8 और 9 नवम्बर को ई.एस.आई. चिकित्सक सरकारी जिला अस्पताल में भी ड्युटी दें। ई.एस.आई. प्रशासन ने डॉक्टरों की सूची बना दी। यह पता चलते ही फरीदाबाद में ई.एस.आई. के दोनों अस्पतालों और आठों डिस्पैन्सरियों के डॉक्टरों में आक्रोश। इस-उस कारण से सामुहिक अवकाश लेना अथवा नहीं लेना अपना निर्णय था लेकिन सरकारी अस्पताल के डॉक्टरों के विरुद्ध जा कर वहाँ ड्युटी करना स्वीकार नहीं। "क्या करें?" का प्रश्न। अगले दिन जनरल बॉडी मीटिंग करने की आम सहमति बनी।

7 नवम्बर को सरकारी अवकाश। दिल्ली में निवास वाले डॉक्टर भी जनरल बॉडी मीटिंग में पहुँचे। तीन घण्टे खुल कर विचार-विमर्श। किसी भी स्थिति में हड़ताल तोड़क की भूमिका नहीं निभायेंगे। सब को स्पष्ट था कि चाणचक्क वाली हड़ताल कानूनी हो ही नहीं सकती। और, सर्वसम्मति से 8 तथा 9 नवम्बर को सामुहिक अवकाश लेने का निर्णय।

8 नवम्बर को सुबह ई.एस.आई. डॉक्टर सरकारी जिला अस्पताल के प्रांगण में एकत्र हुये। ई.एस.आई. चिकित्सकों में से कुछ ने सरकारी जिला अस्पताल पहली बार देखा – ई.एस.आई. में अधिकतर डॉक्टर महिला हैं। सरकारी अस्पताल के डॉक्टरों में नई जान आई। लॉन में एकत्र चिकित्सकों के बीच दिन-भर चर्चायें हुई। हर एक ने अपने मन की बातें की। कोई रोक नहीं। कभी छोटे समूह में, कभी बड़े समूह में बातें की। कई डॉक्टर : "ऐसे लग रहा है जैसे सिर से बहुत भारी बोझ उतर गया है।" यही सब 9 नवम्बर को।

10 नवम्बर को सरकारी अवकाश था। ई.एस.आई. डॉक्टरों ने फिर जनरल बॉडी मीटिंग की। सहज वातावरण में चर्चायें। दो दिन की तनखा के नुकसान का कोई गम नहीं है क्योंकि इन दो दिन में जो पाया है उसकी वैल्यू इन चन्द हजार रुपयों से बहुत ज्यादा है। पहले दिन, 8 नवम्बर को ही राहत महसूस की थी – नतीजा निकले चाहे ना निकले, जो राहत मिली है वह अमूल्य है। अकेले होने के डर और खतरे से मुक्ति-सी मिली। यह जो जीवन चल रहा है उसमें हम अकेले-अकेले नहीं हैं। भविष्य के लिये आशा : हम साथ हो सकते हैं। कुछ नहीं कर सकते की लाचारी के पार जाना : हम कुछ तो कर ही सकते हैं। पुराना ढर्रा बहुत हो गया, नया कुछ करें। नया क्या ? यह पता नहीं है पर फिर भी...... तारतम्य बनाये रखने के लिये एक समिति बनाने की बात आई और नकार दी गई। तारतम्य के लिये, तालमेल के लिये वालन्टीयर बने। निर्णय जनरल बॉडी मीटिंग में ही होंगे का फैसला।

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक एवं सम्पादक शेर सिंह के लिए जे0 के0 आफसैट दिल्ली से मद्रित किया।

RN 42233 पोस्टल रजिस्ट्रेशन L/HR/FBD/73-2011